THE VILLAGE
INTERNATIONAL SCHOOL
"We Nurture Dreams"

GRADE- 10 AB

प्रश्न 1.. नीचे दो गद्यांश दिए गए हैं | किसी एक गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

(5×1=5)

गद्यांश 1- यदि आप इस गद्यांश का चयन करते हैं तो कृपया उत्तर- पुस्तिका में लिखें कि आप प्रश्न संख्या -2 में दिए गए गद्यांश 1 पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिख रहे हैं |

मनुष्य जीवन कर्म-प्रधान है। मनुष्य को निष्काम भाव से सफलता-असफलता की चिंता किए बिना अपने कर्तव्य का पालन करना है। आशा या निराशा के चक्र में फँसे बिना उसे निरंतर कर्तव्यरत रहना है। किसी भी कर्तव्य की पूर्णता पर सफलता अथवा असफलता प्राप्त होती है। असफल व्यक्ति निराश हो जाता है, किंतु मनीषियों ने असफलता को भी सफलता की कुंजी कहा है। असफल व्यक्ति अनुभव की संपत्ति अर्जित करता है, जो उसके भावी जीवन का निर्माण करती है। जीवन में अनेक बार ऐसा होता है कि हम जिस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए परिश्रम करते हैं, वह पूरा नहीं होता है। ऐसे अवसर पर सारा परिश्रम व्यर्थ हो गया-सा लगता है, और हम निराश होकर चुपचाप बैठ जाते हैं। उद्देश्य की पूर्ति के लिए दुबारा प्रयत्न नहीं करते। ऐसे व्यक्ति का जीवन धीरे-धीरे बोझ बन जाता है। निराशा का अंधकार न केवल उसकी कर्म-शक्ति, वरन् उसके समस्त जीवन को ही ढक लेता है। निराशा की गहनता के कारण लोग कभी-कभी आत्महत्या तक कर बैठते हैं। मनुष्य जीवन धारण करके कर्म-पथ से कभी विचलित नहीं होना चाहिए। विघ्न-बाधाओं की, सफलता-असफलता की तथा हानि-लाभ की चिंता किए बिना कर्तव्य के मार्ग पर चलते रहने में जो आनंद एवं उत्साह है, उसमें ही जीवन की सार्थकता है।

निम्नलिखित में से निर्देशानुसार सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए -

(i) मनुष्य के कर्तव्य-पालन में कैसा भाव होना चाहिए?

(क) सफलता का भाव
(ख) सकाम भाव
(ग) निष्काम भाव
(घ) परिश्रम का भाव

(ii) सफलता कब प्राप्त होती है?

(क) आशा-निराशा के चक्र में फँसे रहने पर (ख) निरंतर कर्तव्यरत रहने पर
(ग) परिश्रम करने पर (घ) कर्तव्य की पूर्णता पर

(iii) मनुष्य के लिए असफलता भी सफलता की कुंजी बन जाती है, क्योंकि वह :
(क) निष्क्रिय हो जाता है। (ख) अनुभव अर्जित करता है।
(ग) आशा-निराशा के चक्र में नहीं फँसता। (घ) दुबारा प्रयत्न नहीं कर पाता।

(iv) जीवन बोझ कब नहीं बनता -
(क) परिश्रम व्यर्थ हो जाने पर (ख) असफल हो जाने पर
(ग) निराश हो जाने पर (घ) उद्देश्य पूरा हो जाने पर

(v) जीवन की सार्थकता है :
(क) लक्ष्य से विचलित न होना (ख) कर्तव्य मार्ग पर चलते रहना
(ग) हानि-लाभ की चिंता करना (घ) सफलता के लिए दुबारा प्रयत्न करना

गद्यांश II - यदि आप इस गद्यांश का चयन करते है तो कृपया उत्तर - पुस्तिका में लिखें कि आप प्रश्न संख्या - 2 में दिए गए गद्यांश II पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिख रहे हैं |

घड़े को जल से भर देने पर उसे मस्तक पर रखकर मीलों चले जाइए, एक बूँद पानी भी छलक कर बाहर नहीं गिरेगा। किंतु जिस घड़े में जल की मात्रा कम होगी, वह छलकता रहेगा, मानो वह पुकार-पुकार कर कह रहा हो कि उसमें जल है। अथाह जल का स्वामी समुद्र वर्षाकाल में सामान्य स्थितियों में मर्यादा लाँघकर बाढ़ का आतंक नहीं पैदा करता, किन्तु छोटी-छोटी नदियाँ अपने तटवर्ती क्षेत्रों को तहस-नहस कर डालती हैं। इसी तरह जिस मनुष्य में वास्तविक विद्वत्ता होती है, वह अपने पांडित्य का ढिंढोरा नहीं पीटता, बल्कि सदा विनम्र एवं निरहंकार बना रहता है। कम पढ़ा-लिखा व्यक्ति ही बात-बात में मिथ्या पांडित्य-प्रदर्शन की चेष्टा करता है। जो वस्तुतः धनवान होता है, लोगों से यह नहीं कहता-फिरता कि वह धनवान है। उसका रहन-सहन, आचार-विचार सादगी से पूर्ण होता है लेकिन साधारण स्थिति का व्यक्ति सदैव यह दिखलाने का प्रयत्न करता है कि वह धनी और संपन्न व्यक्ति है। अभावग्रस्त लोगों को सदा यही कुंठा बेचैन

बनाए रखती है कि वे अभावग्रस्त हैं, जिस पर विजय पाने के लिए वे मिथ्या-प्रदर्शन की आड़ लेते हैं। पूर्णता गंभीरता एवं विनम्रता को जन्म देती है, किंतु अपूर्णता चंचलता को। आज विश्व में या समाज में जो भी आपा-धापी, उत्तेजना तथा अशांति दिखाई पड़ती है उसका मूल कारण अधूरापन ही है। धन, विद्या, पद आदि की पूर्णता पर ही शांति-सुख निर्भर करते हैं।

निम्नलिखित में से निर्देशानुसार सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए -

(i) घड़े से एक बूँद भी पानी नहीं गिरता, क्योंकि

(क) घड़े से पानी की मात्रा कम होती है। (ख) घड़ा मस्तक पर रखा होता है।

(ग) आधे घड़े में जल भरा होता है। (घ) घड़ा जल से लबालब भरा होता है।

(ii) कम पढ़ा-लिखा व्यक्ति पांडित्य-प्रदर्शन करता है:

(क) धनवान होने के कारण (ख) अज्ञान के कारण

(ग) अहंकार के कारण (घ) प्रदर्शन-प्रियता के कारण

(iii) अभावग्रस्त लोग विजय पाने के लिए क्या करते हैं?

(क) विनम्रता प्रदर्शन (ख) समृद्धि प्रदर्शन

(ग) मिथ्या प्रदर्शन (घ) बेचैनी प्रदर्शन

(iv) चंचलता का कारण होता है:

(क) अपूर्णता (ख) विनम्रता

(ग) सादगी (घ) गंभीरता

(v) समाज में व्याप्त अशांति का कारण है :

(क) उत्तेजना (ख) आपाधापी

(ग) अधूरापन (घ) अविद्या